भगवान को अपना पार्टनर बनाने के रास्ते कौन से...?

एक व्यक्ति पेड़ के नीचे आराम से बैठा था। उसकी दायीं ओर से चलते हुए एक आदमी आकर पूछता है: 'इस तरफ के रास्ते की आपको जानकारी है?'

आराम से छाया में बैठा हुआ व्यक्ति पूछता है: 'आप कौन से रास्ते की जानकारी चाहते हो? एक रास्ता छोटा है, लेकिन रेतीला है। चलने में कठिनाई होती है। दूसरा रास्ता बहुत अच्छा है, लेकिन लम्बा और एकांत का है। तीसरा रास्ता कटीले वृक्षों से भरा हुआ है। फल-फूल वाले वृक्षों से भी भरा है, लेकिन जंगली जानवरों का डर भी है। इसलिए मैंने आपसे पूछा कि आप कौन से रास्ते के बारे में जानकारी चाहते हो?' - बैठे हुए आदमी ने कहा।

- ब्र. कु. गंगाधर

'हाँ, आपने जो कहा वो सब सही है, और मुझे रास्ते के बारे में जानकारी भी है, और मैं अपनी मुसाफिरी श्रद्धापूर्वक ज़ारी रखूंगा और रेत, कांटें आदि की परवाह किए बिना गंतव्य स्थल तक पहुँचूंगा। लेकिन कोई पार्टनर हो तो हिम्मत रहेगी।' - मुसाफिर ने कहा।

'मैं आपको अच्छे से अच्छा पार्टनर, संगी-साथी, पथ बंधु बताता हूँ। वो ईश्वर है, ईश्वर को पार्टनर बनाने वाला कभी भी निराश नहीं होता।' - पेड़ के नीचे आराम से बैठे हुए व्यक्ति ने कहा।

'आपकी बात तो सही है, लेकिन मन डगमगाता है। मन में श्रद्धा नहीं, विश्वास नहीं, कुछ करने के विषय में स्पष्टता नहीं!' - मुसाफिर ने कहा।

'जो खुद की श्रद्धा का पार्टनर नहीं बन सकता, ईश्वर उसका पार्टनर बनने के लिए तैयार नहीं होता। आपमें छ: खामियाँ हैं, वो मेरे ध्यान में आई है।' - बैठे हुए व्यक्ति ने कहा।

'तो मुझे जल्दी से मेरी खामियों के बारे में बताओ। मैं आपको अपना गुरू बनाने के लिए तैयार हूँ।' - मुसाफिर ने कहा।

'भारत के लोगों की यही एक मुश्किल है। कोई कुछ भी चमत्कार की बात करता है, तो वो उसे अपना गुरू मानने के लिए तुरंत तैयार हो जाता है। जैसे पानी को छान के पीना चाहिए, ऐसे ही गुरू को भी कुछेक परीक्षा करके बाद में गुरू मानना चाहिए। नेता हो या गुरू, पूजने का उतावलापन, ये भारतीय मानस की कमज़ोरी है।' - बैठे हुए व्यक्ति ने कहा।

'स्वीकार है, अब मेरी छ: खामियों के बारे में कहो।' - मुसाफिर ने कहा।

'तो अब सुनो' - बैठे हुए व्यक्ति ने कहा।

1. आप मुसाफिर बने हो, लेकिन मुसाफिरी करने से बजाये आपको रास्ते में आने वाले विघ्नों की चिंता है।
2. आप न तो स्वयं में विश्वास रखते हो, ना ही जगत में। अविश्वास, ये प्रगति में बाधक बनने वाला भयानक परिबल है।
3. आपको न अपने निर्णय में विश्वास है, ना ही परमात्मा के निर्णय में। अंदर से खाली मनुष्य बाहर से भी खाली ही रहता है।
4. आपके विचारों में स्पष्टता नहीं है, इसलिए अनिर्णयात्मकता का जंगल आपके अंदर विस्तृत होता रहता है।
5. आप अपना सही लक्ष्य निश्चित कर नहीं सके हो। इसलिए ज़्यादा समय रास्ते की जानकारी के बारे में ही खर्च हो रहा है।
6. दिल की बात सुनो और दिल को अपनी बात समझाओ। जो कार्य आप सिद्ध करना चाहते हो, वो बात उसे सुनाओ, उसकी प्रतिति अपने दिल और दिमाग को कराओ।

बारंबार एक प्रश्न लोगों की चर्चा में रहता है, कि फलाने कथाकार की कथा सुनने के बाद हममें कोई परिवर्तन क्यों नहीं आता?

यहाँ एक प्रेरक कथा की बात करना उचित होगा...

एक व्यक्ति महात्मा बुद्ध के सत्संग में आया करता था। महात्मा बुद्ध सामान्य तरीके से कहते : 'लोभ, दोष और माया पाप का मूल है। हिंसा करना और असत्य बोलना, ये घोर अधर्म है। यदि आप सच्ची शांति प्राप्त करने की इच्छा रखते हो, तो आपमें विराजित दुर्गुणों को त्याग दो आदि आदि।'

प्रवचन सुनने वाले व्यक्ति महात्मा बुद्ध का उपदेश तो सुनते, लेकिन दुर्गुणों का त्याग नहीं कर रहे होते। प्रत्येक क्षण उनका मन खिन्न रहता।

एक दिन उस व्यक्ति ने महात्मा बुद्ध से पूछा : 'महात्मन, मैं बहुत दिन से आपका उपदेश सुनता हूँ, लेकिन मेरे मन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मन बहुत ही खिन्न रहता है।'

- शेष पेज 8 पर

लाइट और माइट बन विश्व की उड़ती कला द्वारा सेवा करो

बाबा का बनने से दु:ख का नाम-निशान ही खत्म हो गया, सुख-शान्ति में सम्पन्न हो गये। सुख-शान्ति दोनों बहन भाई हैं या बच्चे हैं, दोनों बहुत अच्छे हैं। बाबा का एक एक बच्चा कहता है मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। दूसरे किसी को नहीं कहते हैं यह मेरा है। नहीं। मेरा तो एक ही ऐसा है जिसने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है। स्वयं के साथ समय की पहचान मिल गयी है, तो अभी मुझे क्या करने का है? क्योंकि मेरा कौन? मैं कौन? मैं है अभिमान, मेरा है अटैचमेंट इसलिए अपने को अच्छी तरह से देखो। कोई मान देवे यह इच्छा नहीं है, कोई अपमान करे तो दु:ख नहीं है। भगवान को अपना बना देना, इससे बड़ी क्या बात हो सकती है। मुझे तो खास खुशी है क्योंकि मुझे भगवान का बने हुए 80 वर्ष हो गये माना एट ज़ीरो बन जाओ हीरो।

हीरे में भी दो प्रकार हैं - एक है हीरो एक्टर, दूसरा है हीरा। कोई दाग नहीं हो तब तो हीरे की इतनी वैल्यु होती है। कई प्रकार से टेस्ट आयी होगी, ऑफर करेंगे तुम भी थोड़ा यह पहनो, यह करो.. लेकिन कहाँ भी आँख नहीं डूबती है इसलिए बहुत फ्री हैं।

शुरू में जब बॉम्बे में सेवा पर गयी तो लौकिक माँ भी कहती थी और भी कई कहते थे कि कम-से-कम घड़ी तो पहनो ना। तुम कैसे चलेगी? घड़ी को घड़ी-घड़ी ऐसे देखना वेस्ट ऑफ टाइम।जब यह तन मेरा है तो मन भी मेरा है, मैं मेरा अटैचमेंट से नहीं कहती हूँ, पर मन दिखाता है तुम कौन हो और किसकी हो? भगवान मेरा कम्पैनियन है इसमें बहुत ताकत है। जो काम कराना होगा हम हाँ जी कहते हैं, हुआ ही पड़ा है। सिर्फ हमको समय के पहचान की स्मृति हो इसमें अब ना करने का समय नहीं है इसलिए पहले हाँ जी कहने में आज्ञाकारी बनना है। तो भगवान का आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार, फरमान-वरदार बच्चा बनना है - यह कम बात नहीं है। तो मैं बच्ची नहीं, बच्चा हूँ वारिस हूँ। बच्ची के लिये माँ बाप को ख्याल होता है, इसको देना होगा और बच्चे के लिये ख्याल है, देना नहीं है यह अपना वारिस है, जो बाप की मिलकियत है वो बच्चे की है ही। वर्से में मिलती है। न भी मिले पर नशा चढ़ा रहेगा, मेरा बाप कैसा है!

तो आप अपने को देखो मैं बच्चा हूँ किसका! बच्चा समझने से लाइट (हल्के) हो जाते हैं और जिसका हूँ उसकी स्मृति आने से माइट (शक्ति) आ जाती है। अभी लाइट और माइट बनो तो सारे विश्व की उड़ती कला द्वारा सेवा कर सकेंगे। हिन्दू है, मुसलमान है, क्रिश्चियन है, यह काला, यह गोरा है, कहीं कोई भेद-भाव नहीं रहेगा। हमारी नज़रों में सब एक भगवान के हैं क्योंकि परम आत्मा, परम पिता एक है, हम सब भी उस एक के हैं, अन्त मते सो गते यही होगी। सिवाए एक के और कोई हमारे सामने नहीं याद आता है। यह अन्दर अपनी चेकिंग करनी है, अटेन्शन से अपना चार्ट देखना है कि कहाँ जाना है और उसके लिये क्या करने का है? तो अन्दर भावना है मुझे बाप के साथ परमधाम में जाना है, वो शान्तिधाम है, उसके लिए अभी वाणी से परे रहना है। यह सहज योग, राजयोग, कर्मयोग है।

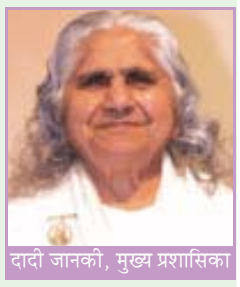
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

कर्म करते भी योग में रहके करने से वो कर्म भी औरों को रोशनी देता है इसलिए यह भी अटेन्शन हो कि जैसा कर्म मैं करूंगी मुझे देख और करेंगे। इन्हीं शब्दों ने बहुत फायदा दिया है। कर्म भले करो क्योंकि कर्म तो करना है ना, पर कर्म बड़े बलवान हैं। जो करना है, जितना करना है अभी कर लो, कल किसने देखा। सबको पता है ना कि क्या करना है? एक मिनट तो क्या, एक सेकेण्ड भी निष्फल न हो जाये। तन, मन, वाणी, कर्म सब सेवा में सफल हो जाये।

अंतिम परीक्षाओं में पास होने के लिए फरिश्ते रूप का अभ्यास करो

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

समर्पण का अर्थ क्या होता है? समर्पित माना सब कुछ अर्पित। हमने सब-कुछ बाबा को अर्पण कर दिया। बाबा ने मुख्य बात कही कि आजकल सबसे ज़्यादा तो व्यर्थ संकल्प चलते हैं, वही खत्म होने चाहिए। तो यह किसने चेकिंग की कि व्यर्थ संकल्प चलते हैं या खत्म हो गये हैं? व्यर्थ संकल्प माना कोई बुरे नहीं हैं, लेकिन जितना सोचना चाहिए उससे ज़्यादा कोई भी बात की डीप में जाते हैं, तो वो भी व्यर्थ हुआ ना। बाकी बुरे संकल्प, वो अलग चीज़ हैं लेकिन जो हमारे सोचने की बात नहीं है और वही सोच चल पड़ती है तो वो भी तो व्यर्थ हुआ ना। उस व्यर्थ संकल्प से टाइम भी व्यर्थ जाता है।

तो बाबा ने जो काम दिया है वो होना चाहिए क्योंकि बाबा ने कहा है अन्त में ऐसी बातें आयेंगी जो आपको फुलस्टॉप लगाना पड़ेगा यानि ज़्यादा टाइम सोचने में न चला जाए। एक सेकण्ड में फुलस्टॉप लगाना पड़ेगा क्योंकि अन्त के समय मनुष्यों की बुद्धि बहुत खराब होगी, और यह जो भटकती हुई आत्मायें जिन्न भूत हैं, वो भी बहुत ज़्यादा अपना वार करेंगे, सबकी अन्तिम घड़ी होगी, तो अन्तिम घड़ी में जैसे जोश आता है हम करके ही देखें। तो वो तो होगा ही इसलिए बाबा ने एक दृश्य दिखाया था कि एक कुमारी योग में बैठी है और खराब संकल्प वालों की दृष्टि वृत्ति उसके ऊपर पड़ती है, वह उसी वृत्ति से उसके आगे आगे आ रहे हैं। तो जैसे वो आगे आगे बढ़े वैसे उनको कुमारी के बजाए लाइट ही दिखाई दी। कुमारी दिखाई नहीं दी, एकदम लाइट दिखाई दी, तो वो डर गये और उनका संकल्प स्टॉप हो गया। तो बाबा कहते हैं अन्त में ऐसी अनेक बातें आयेंगी, उसमें आपको बिल्कुल ही लाइट रूप होना पड़ेगा। कोई किसी भी संकल्प से आवे लेकिन वो संकल्प उन्हों का पूरा नहीं हो, उसके लिये आप फरिश्ते रूप में उन्हों को दिखाई दें। लेकिन यह तब होगा जब हमारा मन के ऊपर एक सेकण्ड में कन्ट्रोल हो। जहाँ हम मन को ठहराना चाहें वहाँ ही उसी संकल्प में मन ठहर जाए। तो यह प्रैक्टिस अभी करनी पड़ेगी। उस समय पेपर के टाइम थोड़ी बहुत हलचल होती है। लेकिन हमारी इतनी प्रैक्टिस हो जो हम कहें स्टॉप तो स्टॉप हो जाये। जैसे बाप के तीन रूप हैं बाप, शिक्षक, सतगुरू, वैसे हमारे भी तीन रूप हैं ब्राह्मण, फरिश्ता और देवता। कभी कोई रूप धारण करो तो कभी कोई रूप धारण करो। अभी से हमारी यह प्रैक्टिस चाहिए। समझो कोई भी बात देख करके व्यर्थ संकल्प चलते हैं या फ्री होते हैं तो कन्ट्रोलिंग पॉवर कम हो जाती है इसलिए व्यर्थ संकल्प आते हैं। तो वो व्यर्थ संकल्प हम एक सेकण्ड में स्टॉप कर सकते हैं? यह प्रैक्टिस अभी ही करनी पड़ेगी! तो रात्रि को सोने के पहले हर एक सारे दिन की रिज़ल्ट बाबा को सुनाये। पहले ज़माने में सारा परिवार साथ में बैठता था और लेन-देन करते थे। आजकल वो ज़माना ही बदल गया लेकिन बाबा तो बड़े ते बड़ा है ना, तो सारी रिज़ल्ट बाबा को बतानी चाहिए। हम इस बंधन में स्वयं को बांधेंगे तो अपनी चेकिंग कर सकेंगे। बाबा ने यह भी कहा है कि मानो आपसे छोटी-मोटी गलती हो गयी, व्यर्थ संकल्प चलना भी तो गलत है ना! लेकिन उसकी माफी बाबा से अभी ले लो। अगर अभी माफी ले लेंगे, तो उसमें यह फायदा होता है कि जो कोई भी चीज़ दे दी तो दी हुई चीज़ अगर वापस आ जाती है तो सोचा जाता है कि क्या दी हुई चीज़ मैं अपने पास रख सकती हूँ! तो बाबा को दिल से दे दी, तो बाबा उसकी सज़ा क्या देगा! बाबा तो और ही पॉवर भरेगा। इसलिए बाबा को सुनाकर माफी ले लो। तो धर्मराजपुरी में जाना नहीं पड़ेगा। तो रात को सोने के पहले यह ज़रूर करना चाहिए, जिससे नींद बहुत अच्छी आती है, आप करके देखना। जैसे दो घण्टे की नींद में अगर संकल्प स्वप्न आदि कुछ नहीं हुआ, दिमाग खाली है तो ऐसे लगता है जैसे हम चार घण्टे सोके उठे हैं। दो घण्टे का सुख जैसे चार घण्टे का लगता है। तो यह ज़रूर करना चाहिए, तो रहेगा कि मेरे को बाबा को सुनाना है। बाबा क्या है वो तो हमको पता है। तो बाबा को सुनाना है तो आपकी चेकिंग ऑटोमेटिकली चलेगी। रोज़ का रोज़ बाबा को दे दो और माफी ले लो तो हम कर्मातीत होते जायेंगे। सभी को कर्मातीत तो होना है ना।